Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.05.01.23
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

निराला की काव्य–यात्रा के विविध आयाम

डॉ0 दीपक कुमार राय
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, सी0एस0एन0 पीजी कॉलेज, हरदोई

महाप्राण निराला निःसंदेह आधुनिक काव्य के 'शलाका पुरुष' हैं। उनकी प्रतिभा का प्रसार काव्य, कथा–साहित्य, निबन्ध, आलोचना, संस्मरण, रेखाचित्र अर्थात विभिन्न विधाओं में हुआ है, किन्तु मुख्य रूप से वे कवि हैं। कवि–रूप में उन्होंने हिन्दी कविता को नई गति और दिशा दी है। वे हिन्दी के उन विरल कवियों में से हैं, जिनको जन–मानस में व्यापक प्रतिष्ठा मिली है, जिनको दीर्घायु मिली है और एक युग–युगीन कवि के रूप में अक्षुण्ण ख्याति मिली है। हिन्दी में कवि तो बहुत हुए हैं और मनीषी भी बहुत हुए हैं, किन्तु कवि मनीषी मुख्य रूप से तीन ही हैं। तुलसीदास, प्रसाद और निराला। निराला की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि युग प्रवृत्तियों के निश्शेष हो जाने पर भी वे अभी तक कालातीत नहीं हुए हैं, बल्कि छायावाद, रहस्यवाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, नवगीत अर्थात प्रत्येक भाव–धारा से जुड़े हुए हैं। वे इनके प्रवर्तक माने जाते हैं और इसलिए वे आज भी प्रासंगिक हैं। वस्तुतः निराला जैसा निराला व्यक्तित्व हिन्दी में किसी दूसरे कवि का नहीं है।

निराला जी ने बहुविध साहित्य का सृजन किया है। इससे उनका निरालापन भी प्रकट हुआ है। वस्तुतः जीवन और साहित्य, दोनों क्षेत्रों में वे निराले ही थे। उनके साहित्य की इस विविधरूपता और विलक्षणता से प्रेरित होकर आलोचकों ने उन्हें विभिन्न रूपों में परिभाषित करने का प्रयत्न किया हैं। आचार्य

Received: 04.04.2022 **Accepted:** 30.04.2022 **Published**: 30.04.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.05.01.23
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

नन्द दुलारे बाजपेयी ने उन्हें अध्यात्म, भक्ति, रहस्य चेतना और सांस्कृतिक निष्ठा से सम्पन्न सिद्ध किया है, तो डॉ0 रामविलास शर्मा ने उन्हें जनवादी संघर्ष का सेनानी सिद्ध किया है। अन्य आलोचकों ने भी उन्हें अपने–अपने मतानुसार क्रान्तिकारी, आत्महन्ता, महाप्राण, साहित्य देवता, नीलकण्ठ, युग कवि, विश्वकवि आदि नाम दिये हैं।

अवध का पछाहीं भाग बैसवाड़ा कहलाता है। बैसवाड़ा को लोग बैसवारा भी कहते हैं। यह रायबरेली और उन्नाव जनपद के 225 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में बसा हुआ है। बैस ठाकुरों की बस्ती के कारण बैसवाड़ा कहलाता है। इसे अवध का हृदय भी कह सकते हैं। अवधी का सबसे मधुर रूप यहीं बोला जाता है। इसी प्रकार बैसवारे की भी अपनी बोली है अपना मिज़ाज है, अपनी लोक संस्कृति है। जिस पर यहाँ के लोग बड़ा अभिमान करते हैं। क्षेत्र के लोग बड़े जीवट और हेकड़ टाइप होते हैं।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने बैसवारे की यात्रा करके लिखा था कि यहाँ का हर आदमी अपने को भीम और अर्जुन समझता है। कसरत और कुश्ती के मजबूत कद काठी वाले गुल मुच्छों के शौकीन अनेक लोग गाँवों की शोभा हुआ करते थे। गंगा नदी, लोन नदी, सई नदी इस क्षेत्र की अमृत बरसाने वाली नदियाँ हैं। चाँदनी रात में सफेद धरती पर रस टपकाते हुए महुये के पेड़ हैं, ईंख पेरते हुए कोल्हू हैं, कड़ाहों में खौलाया हुआ रस, उसके बाद गुड़, रस पका हुआ, राब मटकों में भरी हुई, मेहमानों के स्वागत के लिए मिट्टी के बर्तनों में ताकर रख दिया जाना, काँसों के मूर्छल, सतई के फूल, नगाड़ा की चोप, फाँदे के फाँदे ऊखों की चुहाई, बाजरे

Received: 04.04.2022 **Accepted:** 30.04.2022 **Published**: 30.04.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.05.01.23
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

की मीठी रोटी, चमड़े के पुर से कुएँ से बैलों द्वारा पानी निकालना, तिरछी दुपल्ली टोपी, कड़ू तेल से चुचवाती जुल्फें, मुँह में दोहरा व सुरती का फंका, एक टांग में लम्बी धोती, दूसरी टांग में थोड़ी कम लाँगदार धोती कान पर अद्धी बीड़ी या चने की गोली, तेलुवायी लाठी नीचे लाठी में गोल छल्ला, पैरों में चू चरर–मरर नुकीला जूता यही बैसवारे की धरती का प्यार था।

इसी सुंदर क्षेत्र के जनपद उन्नाव में गढ़ा कोला एक छोटा सा गांव है जो बीघापुर रेलवे स्टेशन से करीब 5 किमी उत्तर में पड़ता है। इसी गांव में बसंत पंचमी के दिन सवंत 1953 को रामसहाय तिवारी के घर निराला का जन्म हुआ। पंडित ने जन्म कुंडली बनाई कहा लड़का मंगली है दो ब्याह लिखे हैं, बड़ा भाग्यवान है नाम करेगा। इसका नाम रखें सूर्यकुमार। जस बाप तस बेटा। महतारी तो साँवली मगर बेटा गोरा, आँखे और नाक बिल्कुल रामसहाय तिवारी जैसी।

महाकवि निराला के काव्य में विभिन्न प्रकार की प्रवृत्तियां पाई जाती है। वे कहीं एक वेदान्ती कवि के रूप में द्वैत अद्वैत पर चिंतन करते दिखाई देते हैं, कहीं शक्ति–साधना, योगाभ्यास और वैष्णव भक्ति से परिपूरित प्रतीत होते हैं तो कहीं रहस्य–जिज्ञासा के कारण भावाकुल से दिखाई देते हैं। वे स्वयं को रामकृष्ण का मानस प्रजापुत्र और अभिनव विवेकानन्द कहा करते थे। दक्षिणेश्वर के मंदिर में संन्यासियों की तरह गैरिक वस्त्र धारण करके तंत्र–साधना करते हुए उन्हें देखा गया था। उनकी अनेक कविताओं में इस रहस्य–दर्शन की गहरी छाप है, जैसे–तुम और मैं, कौन 'तम के पार'। अधिवास, तुलसीदास, राम की शक्ति पूजा आदि।

Received: 04.04.2022 **Accepted:** 30.04.2022 **Published**: 30.04.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.05.01.23
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

निराला के दर्शन में वेदांत, योग, शाक्त, वैष्णव मत और समाज दर्शन के पंच स्वरों का मिश्रण है।

निराला काव्य का दूसरा वैशिष्ट्य है–क्रांति और विद्रोह। उन्होंने तोड़ती पत्थर, विधवा, भिक्षुक, दान, वनबेला, कुकुरमुत्ता, मँहगू महँगा रहा, कुत्ता भौंकने लगा, झींगुर डटकर बोला, राजे ने रखवाली की, छोड़ दो जीवन यो न मलो, देवी सरस्वती आदि रचनाओं में शोषण, अन्याय और उत्पीड़न को चुनौती दी है और सर्वहारा या लघुमानव की व्यथा कथा कही है। 'बेला' और 'नये पत्ते' की रचनाएं उनकी प्रगतिशील विचारधारा की प्रतिनिधि हैं। उनका ध्येय था दरिद्रनारायण का वर्णन उन्हीं के शब्दों में–

"मैंने मैं शैली अपनाई
देखा एक दुखी निज भाई"

निराला ने व्यावहारिक जीवन में इस जनदर्शन को घटित करके दिखाया है। इसके कारण उन्हें अनेक प्रकार के घात–प्रतिघात झेलने पड़े, पर उनका दुर्धर्ष व्यक्तित्व परिस्थितियों से पराभूत नहीं हुआ।

निराला जी की तीसरी देन है, व्यंग्य और वेदना का समन्वित प्रयोग। अपने प्रचण्ड व्यक्तित्व के बावजूद तथा अतिशय संवेदनशील होने के कारण वे अपनी कविताओं में जब शोकातुर हो उठे हैं अवसाद और विक्षोभ उनकी रचनाओं में बहुशः व्यक्त हुआ है। 'सरोज स्मृति' इस भाव धारा की प्रतिनिधि कविता है। इसके अतिरिक्त 'स्नेह निर्झर बह गया है, मैं अकेला, दुख ही जीवन की कथा रही,

Received: 04.04.2022 **Accepted:** 30.04.2022 **Published**: 30.04.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.05.01.23
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

देवी सुकुल की बीवी, चतुरी चमार, कुल्लीभाट आदि में उनका यह दुःख दर्द सहज रूप से प्रस्फुटित हो उठा है।

महाप्राण निराला बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। यद्यपि काव्य के क्षेत्र में उनकी कीर्ति अमर है किन्तु साहित्य की विभिन्न विधाओं–उपन्यास, कहानी, रेखाचित्र, संस्मरण, निबंध, संपादन कार्य, अनुवाद लेखन, पत्र–लेखन व बाल साहित्य की धारा को उन्होंने एक नयी ऊँचाई दी।

निराला की काव्य यात्रा 1920 से 1962 तक व्याप्त है। इस बीच उनके 1 दर्जन काव्य ग्रन्थ प्रकाशित हुए–अनामिका (1923), परिमल (1929), तुलसीदास (1934), गीतिका (1935), कुकरमुत्ता (1940), अणिमा (1943), बेला, नये पत्ते (1946), अर्चना (1950), आराधना, गीतगुंज (1954), सांध्यकाकली (मरणोपरांत) तथा बाद में संकलित स्फुट कविताएँ।

निराला का काव्यक्षेत्र अत्यंत विशद है। उन्हें किसी वाद की सीमा में आबद्ध करना कठिन है, यद्यपि लोग उन्हें विविध वादों के अन्तर्गत घसीटने की चेष्टा करते हैं। छायावाद के आधार स्तम्भों में निराला जी गण्यमान हैं। आचार्य शुक्ल एवं कुछ अन्य समीक्षक उनके काव्य में स्वच्छन्दतावाद देखते रहे हैं। व्यंग्यपरक रचनाओं के बाद उन्हें प्रगतिवादी और प्रयोगवादी कहा जाने लगा। परवर्ती आत्मनिवेदनपरक कृतियों को कोई संज्ञा नहीं दी गई। यों निराला जी के काव्य में विविध वाद ढूँढे गये, जबकि सत्य यह है कि वे भले ही आशा अथवा आक्रोश या भक्ति के स्वर लेकर चले हों, उनके हृदय में मानव जीवन के प्रति गहरी आस्था का दीप सदैव जलता रहा है। निराला की कविता और हिन्दी

Received: 04.04.2022 **Accepted:** 30.04.2022 **Published**: 30.04.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.05.01.23
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

आलोचना का गहरा संबंध रहा है। उन्होंने जब लिखना शुरु किया, तब हिन्दी कविता में द्विवेदी–युग चल रहा था। स्वभावतः निराला की कविता का व्यापक विरोध हुआ इस विरोध में रीतिवादी आलोचक ही नहीं अपितु द्विवेदीयुग की दो महान विभूतियां भी शामिल थी–पं0 महावीर प्रसाद द्विवेदी, और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल। सन् 1916 में रचित निराला की प्रथम रचना 'जुही की कली' सरस्वती पत्रिका में छापने के लिए जब पं0 महावीर प्रसाद द्विवेदी के यहां भेजी गयी, तो उसे इस सुझाव के साथ वापस कर दिया गया कि **आपके भाव अच्छे हैं, पर छन्द अच्छा नहीं, इस छंद को बदल सकें तो बदल दीजिए।**

सन् 1929 ई0 में प्रकाशित 'परिमल' निराला की काव्य–कृतियों में ही नहीं, समस्त हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण कृति के रूप में प्रतिष्ठित है। निराला के स्वच्छंदतावादी व्यक्तित्व की झलक सर्वाधिक इसी में है। पुस्तक की लम्बी भूमिका में 'मुक्त–छन्द' की परम्परा के समर्थन में कवि ने वेदों तक के उदाहरण लिए हैं। इसमें 'जूही की कली', पंचवटी प्रसंग, अधिवास, बादल राग, तोड़ती पत्थर, संध्या सुंदरी शिवाजी का पत्र आदि अनेक भावपूर्ण तथा कलात्मक कविताओं को स्थान दिया गया है।

'परिमल' में निराला न केवल मुक्त छन्द में, बल्कि अतुकान्त छन्दों की रचना में भी खरे उतरे हैं। इसमें परम्परा से हटकर एक नये भाव बोध और भाषा–बोध के दर्शन होते हैं। प्रकृति, प्रेम, सौन्दर्य, वेदना, क्रान्ति और विद्रोह सभी को लेकर हिन्दी उद्यान में प्रभातकालीन स्वर्णलता के बीच परिमल का प्रवेश होता है। सन् 1962 में बच्चन सिंह जी ने 'परिमल' के बारे में कहा–'परिमल' में जिस

Received: 04.04.2022 **Accepted:** 30.04.2022 **Published**: 30.04.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.05.01.23
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

चीज ने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया, वह थी दीन, दुःखी, कातर, असहाय के प्रति निराला की करुणा, ममता। निष्कर्षतः 'परिमल' निराला की काव्य कृतियों में ही नहीं, समस्त हिन्दी साहित्य में एक महत्वपूर्ण कृति के रूप में प्रतिष्ठित हैं। निराला के स्वच्छंदतावादी व्यक्तित्व और मुक्त छंद की झलक सर्वाधिक इसी में है।

'गीतिका' निराला जी के (101) गीतों का संकलन है। 'गीतिका' नाम से प्रकाशित इस कृति को समीक्षक हिन्दी साहित्य में एक महान परिवर्तन प्रस्तुत करने वाली कृति मानते हैं। 'गीतिका' के गीतों में दर्शन, सौन्दर्य, श्रृंगार आदि की मनोरम व्यंजना है। अर्थ गाम्भीर्य इन गीतों की विशेषता है।

'गीतिका' की भूमिका में महाकवि जयशंकर प्रसाद जी लिखते हैं– निराला जी, हिन्दी–कविता की नवीन धारा के कवि हैं, और साथ ही भारती–मन्दिर के गायक भी हैं। उनमें केवल पिक की पंचम पुकार ही नहीं, कनेरी की सी एक ही मीठी तान नहीं, अपितु उनकी गीतिका में सब स्वरों का समारोह है। उनकी स्वर साधना हृदय के ग्रामों को झंकृत कर सकती है कि नहीं, यह तो कवि के स्वरों के साथ तन्मय होने पर ही जाना जा सकता है। गीतिका हिन्दी के लिए सुन्दर उपहार है। उसके चित्रों की रेखाएँ पुष्ट, वर्णों का विकास भास्वर है।**1**

इस संग्रह का पहला ही गीत–

वर दे, वीणा वादिनी वर दे!
प्रिय स्वतंत्र–रव अमृत–मन्त्र नव
भारत में भर दे।

Received: 04.04.2022 **Accepted:** 30.04.2022 **Published**: 30.04.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.05.01.23
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

नव गति, नव लय, ताल छन्द नव,
नवल कंठ, नव जलद–मन्द रव,
नव नभ के नव विहग–वृन्द को,
नव पर नव स्वर दे।

यह गीत भारत पुत्रों के गले का कंठहार बन चुका है। यह एक सामान्य सरस्वती वंदना न होकर शक्ति की प्रेरणा है। इसमें कवि अंग्रेजी दासता से मुक्ति हेतु भारतवंशियों में स्वतंत्रता और अमरत्व की भावना की कामना करता है। यह कविता निराश, हताश एवं खंडित मन का सदैव पथ–प्रदर्शन करती है।

'अनामिका' का प्रकाशन सन् 1938 में हुआ। निराला काव्य की प्रायः सभी प्रवृत्तियों की झलक अनामिका में मिलती है। अनामिका में श्रृंगारिक, भक्तिपरक, प्रकृतिपरक, वर्णनात्मक अर्थात भांति–भांति की कविताएं हैं। **इसके प्राक्कथन में निराला स्वयं लिखते हैं–**''अनामिका नाम की पुस्तिका मेरी रचनाओं का पहला संग्रह है। आदरणीय मित्र स्वर्गीय श्री बाबू महादेव प्रसाद जी सेठ ने प्रकाशित की थी। वे मेरी रचनाओं के पहले प्रशंसक हैं... यद्यपि उनसे मेरा परिचय मेरे समन्वय–सम्पादन काल में हुआ, फिर भी वैदान्तिक साहित्य से खींचकर हिन्दी में परिचित और प्रगतिशील मुझे उन्होंने किया, अपना 'मतवाला' निकालकर। मेरा उपनाम 'निराला' 'मतवाला' के ही अनुप्रास पर आया था।'' **2**

अनामिका की कई कविताएं काव्य की दृष्टि से विशिष्ट और उत्कृष्ट हैं। 'सेवा प्रारंभ' 'तोड़ती पत्थर' 'सरोज स्मृति' कविताओं में दीन–हीन भावों की अभिव्यक्ति है। इसी संग्रह में 'दान', राम की शक्तिपूजा जैसी कालजयी रचनाएं भी

Received: 04.04.2022 **Accepted:** 30.04.2022 **Published**: 30.04.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.05.01.23
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

हैं। कर्मकाण्ड व धार्मिक आडम्बर से युक्त मानव संवेदना रहित आचरण दान कविता में द्रष्टव्य है–

मेरे पड़ोस के वे सज्जन,
करते प्रतिदिन सरिता मज्जन,
बढ़ते कपियों के हाथ दिये,
देखा भी नहीं उधर फिरकर,
जिस ओर रहा व भिक्षु इतर,
चिल्लाया किया दूर दानव,
बोला मैं–धन्य, श्रेष्ठ मानव। 3

'राम की शक्ति पूजा' संग्रह की विशिष्ट रचना है। इस कविता की मूलवस्तु पुराख्यान से संबंधित है, लेकिन इसका संदेश समकालीन जनजीवन से जुड़ा हुआ है। यह कविता रची गयी है, स्वतंत्रता आंदोलन की अवधि में। निराला जी निराश–हताश भारतीय जनता को इसीलिए प्रेरित करते हुये जाम्बवान के शब्दों में कहते हैं–'शक्ति की करो मौलिक कल्पना' और अंत में शक्ति के मुख से इसीलिए यह अभयदान दिलाते हैं–

धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन, जिसके लिए सदा ही किया शोध।
जानकी! हाय उद्धार प्रिया का न हो सका,
वह एक और मन रहा राम का जो न थका।
होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन,

Received: 04.04.2022 **Accepted:** 30.04.2022 **Published**: 30.04.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.05.01.23
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

कह महाशक्ति राम के बदन में हुई लीन। 4

सरोज–स्मृति (1935) भी निराला की श्रेष्ठ रचनाओं में गिनी जाती है। सरोज–स्मृति निराला द्वारा अपनी पुत्री सरोज के असामयिक निधन पर लिखी गई शोकपूर्ण कविता है। यह कविता 'शोकगीत' या 'एलेजी' की श्रेणी में आती है। इसमें कवि की वैयक्तिक अनुभूति सीधे व्यक्त हुई है। 'सरोज स्मृति' हिन्दी में अब तक अपने ढंग की अकेली कविता है। यहाँ जीवन की गहरी आर्थिक विषमता का प्रश्न कुछ इस प्रकार उठाया गया है कि हम पूँजीवादी समाज की निरंकुशता पर क्षुब्ध हो उठते हैं। इसमें कवि अतीत की स्मृतियों में पहुंच कर अपने साहित्यिक संघर्ष की ओर संकेत करता है। 'सरोज स्मृति' में पूर्व दीप्ति (फ्लैश बैक) का नाटकीय विधान है। कवि मृत पुत्री के माध्यम से अपने संपूर्ण जीवन की त्रासदी का स्मरण करता है। एक स्मरण चित्र के अंदर अनेक स्मरण चित्र, नाटकीय ढंग से अभिव्यक्त हुए हैं। **प्रख्यात आलोचक प्रो0 सूर्यप्रसाद दीक्षित के शब्दों में–**

निराला की इस रचना में काव्य के मर्म के साथ–साथ कवि का व्यक्तित्व सामाजिक प्रतिक्रियाओं के साथ–साथ व्यक्त हुआ है। विरोध और क्रांति के स्वर पूर्णरूपेण मुखरित हुए हैं। निराला जी ने अपने जीवन में जिन सामाजिक मान्यताओं का विरोध किया और जैसा कवि का आचरण हुआ, उन्हीं का आंकलन है। **5**

कुकुरमुत्ता (1945) निराला की सर्वाधिक चर्चित कविता है। इसे उन्होंने 'कालाकांकर' के तालुकेदार कुंअर सुरेश सिंह को समर्पित किया है। इसकी रचना–प्रक्रिया में विदेशी आधुनिकता का प्रत्याख्यान है। उसके पीछे हिन्दी जाति

Received: 04.04.2022 **Accepted:** 30.04.2022 **Published**: 30.04.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.05.01.23
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

का स्वाभिमान मुखरित हुआ है। स्वयं निराला का आत्मदर्प बोल उठा है और यहाँ व्यक्त हुआ है।

निराला के सुधी आलोचक 'रामनिवास पंथी' इस कविता के बारे में लिखते हैं–निराला की यह कविता भारत के जीवन दर्शन का सम्पूर्ण अर्थ समेटे हिन्दी साहित्य का वह शिलालेख है जहाँ से मानव जीवन को उसके स्मृति शेष ताजा होते हैं ओर आगे का मार्ग प्रशस्त होता है। **6**

अबे सुन बे गुलाब।
भूल मत, गर पाई खुशबू रंगो आब।
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट!
डाल पर इतरा रहा कैपीटलिस्ट।

सन् 1943 ई0 में प्रकाशित निराला जी का सातवाँ काव्य संग्रह है–'अणिमा'। अणिमा युग मंदिर उन्नाव से प्रकाशित हुआ था। यह निराला का 'गीत संग्रह' है। इस संग्रह के कुछ गीतों का प्रकाशन प्रसारण कई पत्रिकाओं में तथा प्रस्तुतीकरण कई मंचों से हुआ। 45 गीतों के इस काव्य संग्रह में मुख्यतः तीन प्रकार की प्रवृत्तियां हैं–भक्ति, करुणा व प्रशस्ति। इस संग्रह की महत्वपूर्ण कविताओं में–'मैं अकेला', 'स्नेह निर्झर बह गया है', 'तुम और मैं' आदि हैं। यहाँ संत रविदास, आचार्य शुक्ल, भगवान बुद्ध, श्रीमती महादेवी वर्मा आदि का प्रशस्तिगान कर साहित्यिक मनीषियों, राजनेताओं एवं धार्मिक महात्माओं के प्रति निराला ने अपनी श्रद्धा ज्ञापित की है। महान संत रविदास के प्रति वे लिखते हैं–

Received: 04.04.2022 **Accepted:** 30.04.2022 **Published**: 30.04.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
DOI: 10.46523/jarssc.05.01.23
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575
ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 01

छुआ पारस भी नहीं तुमने, रहे
कर्म के अभ्यास में, अविरत बहे।
ज्ञान–गंगा में, समुज्ज्वल चर्मकार,
चरण छूकर कर रहा मैं नमस्कार। 7

इसी प्रकार आचार्य शुक्ल को श्रद्धांजलि देते हुए लिखते हैं–

अमा निशा थी समालोचना के अम्बर पर,
उदित हुए जब तुम हिन्दी के दिव्य कलाधर।
दीप्ति–द्वितीय हुई तीन खिलने से पहले,
किन्तु निशाचर संध्या के अंतर में दहले। 8

इस प्रकार हम देखते है कि निराला काव्य के विविध रंग हैं उनमें शक्ति भी है, भक्ति भी है, क्रोध है तो करुणा भी, अभिमान है तो त्याग भी, फूल है तो शूल भी।

आधुनिक पीढ़ी को निराला का महान संदेश है कि विकट परिस्थितियों दुख, हताशा में भी पलायन के स्थान पर शक्ति की करो मौलिक कल्पना, होगी जय–होगी जय।

प्रख्यात आलोचक डॉ0 रामविलास शर्मा ने उनके बारे में लिखा–

यह कवि अपराजेय निराला,
जिसको मिला गरल का प्याला।

Received: 04.04.2022 **Accepted:** 30.04.2022 **Published**: 30.04.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
DOI: 10.46523/jarssc.05.01.23
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575
ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 01

शिथिल त्वचा, ढलढल है छाती,

और उठाये विजय पताका।

(यह कवि है अपनी जनता का

यह कवि अपराजेय निराला/रामविलास शर्मा–2)

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. जयशंकर प्रसाद– भूमिका–गीतिका, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली–1992 संस्करण
2. निराला–प्राक्कथन, अनामिका–लखनऊ–1937 राजकमल प्रकाशन–2014 संस्करण।
3. दान–अनामिका पृ0–28
4. वही पृ0 सं0 117–118
5. प्रो0 सूर्यप्रसाद दीक्षित–'सरोज स्मृति'–निराला समग्र– उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान–संस्करण–2012–पृ0सं0–55
6. 'रामनिवास पंथी'–महाप्राण निराला–चित्र एवं जीवन के नये संदर्भ–माण्डवी प्रकाशन, गाजियाबाद, संस्करण–2005–पृ0सं0–111
7. अणिमा–राजकमल प्रकाश, नई दिल्ली–पृ0सं0–24
8. वही–पृ0सं0–25

Received: 04.04.2022 **Accepted:** 30.04.2022 **Published**: 30.04.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.